REACH Lilly MDR-TB Partnership Media Fellowship Programme

2012-13 FELLOW : PAVAN SHRIVASTAVA

Pavan Shrivastava *is based in Bhopal in Madhya Pradesh, as Jagran City Incharge at Dainik Jagran, India's leading daily newspaper. In the last few years, Pavan has received several prestigious awards and fellowships including the Madhav Rao Sapre Sangrahalaya Journalism Award in 2011, the Vikas Samvad Media Fellowship in 2011 (focusing on child trafficking in Madhya Pradesh) and the CSE Media Fellowship 2012 (for his work on tiger habitats). Pavan has a strong sense of social responsibility, both personally and professionally, and is especially passionate about health reporting.*

दवा पर नहीं, दुआ पर कर रहे विश्वास

- अधूरे इलाज से मौत के मुंह में पहुंच रहे मरीज
- छह माह का कोर्स बीच में ही छोड़ देते हैं टीबी मरीज

केस एक

साधारण टीबी से पीड़ित हैं। चार माह दवाई खाई और फिर कोर्स पूरा होने के दो माह पूर्व ही दवाई लेना बंद कर दी। कारण खराब रमजान थे, इसलिए दवाई नहीं ले पाई। सबने समझाया लेकिन दवा से ज्यादा दुआ पर विश्वास था।

केस दो

टीबी से पीड़ित भाई, टीबी सेंटर आया। दो माह डॉट्स लो। स्वास्थ्य में सुधार आया और फिर भोले बाबा का सुमिरन अति करने एकमद्दी चले गए। इस दौरान डॉटस लेना बंद कर दिया और फिर डॉटस लेने सेंटर आ गए। एमडीआर टीबी का खतरा बढ़ गया।

टीबी मरीजों की संख्या
एमपी 90,764
भोपाल 4105
एमडीआर टीबी के मरीज
एमपी 53
भोपाल 14

पवन श्रीवास्तव, भोपाल

दवा और दुआ यदि दोनों साथ में हों, तो मरीज के ठीक होने की संभावनाएं कापफी बढ़ जाती हैं, लेकिन यदि इक को छोड़ केवल दुआ के भरोसे ही रहा जाए, तो बीमारी गंभीर हो सकती है। कुछ ऐसा ही हो रहा है टीबी मरीजों के साथ, जो दवा पर कम, पुऽस पर ज्यादा भरोसा कर रहे हैं। यह केवल दो उदाहरण नहीं हैं, बल्कि जिला टीबी सेंटर सहित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सहित डॉटस प्रोवाइडर के पास ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिल जाएंगे, जहां छोटे-छोटे कारणों से मरीज अपनी डॉटस की खुराक छोड़ देते हैं। उनकी यह लापरवाही उन्हें धीरे-धीरे मौत के मुंह की ओर ले जा रही है, क्योंकि एक बार डॉटस का कोर्स अधूरा छोड़ देने पर यह गंभीर टीबी यानी की 'एमडीआर टीबी' में तब्दील हो जाती है, जिसका इलाज न केवल मंहगा होता है, बल्कि बचने की संभावना भी 50 प्रतिशत कम हो जाती है। जिला क्षय अधिकारी डॉ. मनोज वर्मा के अनुसार शुरू में तो मरीज अपने इलाज के प्रति संवेदनशील रहता है, लेकिन जैसे-जैसे दवा ■ शेष पृष्ठ 10 पर

सिलवट के साथ शीत लहर दर्द दो सकती है।

दवा पर नहीं...

असर करने लगती है और उनके स्वास्थ्य में सुधार होने लगता है, ये दवाई के प्रति लापरवाहीन होने लगते हैं और अपने को स्वस्थ्य मान बैठते हैं, जबकि ऐसा होता नहीं है। जब तक डॉट्स का पूरा कोर्स नहीं कर लिया जाता, तब तक टीबी पूरी तरह से कंट्रोल नहीं हो पाती है। अधूरे इलाज के कई कारण हमारे सामने आते हैं। कोई बीच इलाज के दौरान ही अपने स्वस्थ होने पर भगवान का सुक्रिया अदा करने चले जाते हैं, तो कोई व्रत या रोजे के कारण अपनी खुराक बंद कर देता है। इसके अलावा पलेवायी और दुग एडिक्ट अपनी गलत आदतों के कारण बीच में इलाज छोड़ देते हैं। मजदूर रोजगार के विस्थापन के कारण इलाज छोड़ देता है, तो वहीं किसी को परिवार का सहयोग नहीं मिलता। इसके अलावा लोकल डॉक्टर और झोल-झोलिय की गलत सलाह भी दवा को बीच में छुड़वा देती है। कई मामले ऐसे होते हैं कि मरीज को दवा सूट नहीं करती, जिसकी वजह से वह दवा लेना बंद कर देता है। डॉट प्रोवाइडर तेज बहादुर के अनुसार पैंने मरीज एक मरीज को दो माह तक दवा खिलाई, लेकिन उसे जैसे ही यह आभास हुआ कि यह ठीक हो गया है, उसने मुझसे दवा लेने से इंकार कर दिया और कहा कि मैं अब ठीक हो चुका हूं। ...तो फिर नहीं बच पाता मरीज : टीबी के लिए डॉट्स का इलाज आधा छोड़ने पर यह गंभीर टीबी यानी की एमडीआर टीबी में तब्दील हो जाते हैं। टीबी इन डिया के मुताबिक भय में जहां 4.2 प्रतिशत मरीज सिक्लस्टर होते हैं, वहीं भोपाल में भी इसका प्रतिशत लगभग 5 प्रतिशत है। लगने में भले ही यह आंकड़े छोटे लगें, लेकिन यदि संख्या की दृष्टि से देखा जाए, तो इनकी संख्या काफी बड़ी हो जाती है। एमडीआर टीबी में मरीज को न केवल तकलीफ सह जाती है, बल्कि इलाज भी मुश्किल हो जाता है। मरीज के सहन इलाज के बाद भी उसके बचने की उम्मीद 50 प्रतिशत कम हो जाती है। इसका सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह है कि एक एमडीआर का मरीज 10 से 15 एमडीआर के नए मरीज को पैदा कर देता है, यानि कि ऐसे में इसकी रफ्तार धीरे-धीरे बढ़ती ही जाएगी।

... यानी कि काउंसलिंग सही नहीं : सेंटर टीबी ऑफिसर डॉ. राजेश कटारा के अनुसार यदि टीबी का मरीज बीच में अपना इलाज छोड़ देता है, तो इसका अर्थ यह है कि काउंसलिंग सही नहीं है।

टीबी के बाद एचआईवी टेस्ट के लिए जाना पड़ रहा दूसरे सेंटर

टीबी और एचआईवी का चोली-दामन का साथ है। एचआईवी मरीजों को टीबी की संभावना अधिक होती है। इसलिए टीबी मरीजों की एचआईवी जांच जरूरी है, लेकिन भोपाल के 26 टीबी सेंटर्स में से मात्र 11 सेंटर्स में ही दोनों जांच की सुविधाएं उपलब्ध हैं। शेष 15 टीबी सेंटर में केवल टीबी जांच की ही सुविधा उपलब्ध है, जिसकी वजह से रोगियों को दूसरे सेंटर्स में जाकर एचआईवी की जांच करानी पड़ रही है।

पवन श्रीवास्तव, भोपाल

- 26 में से मात्र 11 सेंटर्स में ही है टीबी और एचआईवी जांच की सुविधा, टीबी मरीजों को रही परेशानी

एचआईवी से संक्रमित व्यक्ति में 60 प्रतिशत टीबी होने की संभावना होती है। इसलिए संक्रमित व्यक्ति को टीबी की जांच अवश्य करना चाहिए, लेकिन राजधानी होने के बावजूद भोपाल के सभी टीबी सेंटर्स में एचआईवी टेस्ट की सुविधा उपलब्ध नहीं है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार भोपाल में 26 टीबी सेंटर्स हैं, लेकिन इनमें से मात्र 11 सेंटर्स में ही एचआईवी जांच की सुविधा उपलब्ध है, जिसकी वजह से मरीजों को पहले एक सेंटर्स पर टीबी की जांच कराने जाना पड़ रहा है और फिर दूसरे सेंटर्स पर एचआईवी की जांच कराने। शहीद (परिवर्तित नाम) की छोरी जब कई दिनों तक ठीक नहीं हुई, तो उन्होंने टीबी सेंटर जाकर अपने स्पूटम की जांच कराई।

टैस्ट पॉजिटिव पाया गया, लेकिन जब एचआईवी टैस्ट की बात आई, तो यह सुविधा टीबी सेंटर में थी नहीं। फिर उन्हें ऐसे टीबी सेंटर पर भेजा गया, जहां एचआईवी जांच की सुविधा उपलब्ध थी। इसी प्रकार सुनीता (परिवर्तित नाम) को भी एचआईवी की जांच के लिए दूसरे टीबी सेंटर जाना पड़ा। ऐसे एक या दो नहीं, बल्कि कई केसेस हैं, जब टीबी मरीजों का एक सेंटर पर टीबी की जांच कराने जाना पड़ रहा है और फिर दूसरे सेंटर में एचआईवी की जांच कराने।

टीबी-एचआईवी क्यों इतनी घातक - एचआईवी से संक्रमित व्यक्तियों के लिए टीबी रोग कितना घातक है, इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि एचआईवी संक्रमण से होने वाली प्रत्येक चार मौतों में से एक की मृत्यु टीबी रोग के कारण हुई। इसके बावजूद कि टीबी

15 सेंटर्स में शीघ्र शुरू होंगी दोनों सुविधाएं

जिला क्षय अधिकारी डॉ. मनोज वर्मा के अनुसार यह सही है कि भोपाल में टीबी की जांच के 26 सेंटर हैं और इनमें से 11 सेंटर में टीबी और एचआईवी दोनों की सुविधा उपलब्ध है। शेष 15 सेंटर में एचआईवी जांच की सुविधा उपलब्ध नहीं है, जिसकी वजह से मरीजों को थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है। लेकिन हमारी पूरी कोशिश है कि शीघ्र ही शेष 15 सेंटर्स में भी एचआईवी जांच की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। स्वास्थ्य विभाग ने शेष 15 सेंटर्स में भी एचआईवी जांच की सुविधा उपलब्ध कराने के प्रस्ताव को मंजूर कर लिया है और शीघ्र ही इन सेंटर्स में टीबी और एचआईवी दोनों टैस्ट की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

का इलाज उपलब्ध है और एचआईवी को नियंत्रित किया जा सकता है। भारत में भी 23 लाख एचआईवी पॉजिटिव लोगों में से 95 हजार टीबी-एचआईवी के सह-संक्रमण से पीड़ित हैं। स्वस्थ लोगों में सक्रिय टीबी रोग विकसित होने का खतरा बहुत कम होता है, पर एचआईवी से संक्रमित लोगों में सक्रिय टीबी रोग विकसित होने का खतरा काफी ज्यादा है, क्योंकि एचआईवी शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर देता है।

टीबी रोग आज भी एचआईवी पॉजिटिव लोगों के जीवन के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में विद्यमान है, जबकि हम यह जानते हैं कि टीबी रोग के इलाज के लिए डॉट्स प्रोग्राम के तहत इसकी दवाएं मुफ्त में उपलब्ध हैं।

REACH

SPEAK UP TO STOP TB

the Lilly MDR-TB partnership